THE ASSAM VALLEY SCHOOL
1995 - 2020

दि असम वैली स्कूल

उड़ान

युवा अभिव्यक्ति की.......

अंक. जुलाई 2020

हाय रे, परीक्षा !

आद्या, कक्षा -पाँचवीं

परीक्षा की घड़ी जब नज़दीक आती है
मेरी हालत तो बड़ी पतली हो जाती है
रातों की नींद उड़ जाती है
सपने में भी दादी-नानी पढ़ाने आ जाती हैं |
जब इतिहास की किताब खोलकर बैठती हूँ
तब आदि मानव आकर पूछते हैं
"और बेटा पढ़ाई कैसी चल रही है ?
जल्दी से करलो सब कुछ मेरे बारे में याद,
नहीं तो पृथ्वी जैसे नंबर आएँगे गोल-मटोल|"
डर कर विज्ञान की पुस्तक को खोला
लेकिन 'पौलिनेशन' ने सर को फोड़ा
झटपट बंद की विज्ञान की किताब
और खोल ली गणित की किताब
शून्य से नौ की संख्या ने किया हाल-बेहाल,
पटक-पटक के मारा धोबी पछाड़|
थक-हार कर रस्किन बांड से मिलने चली,
पर उनकी भाषा तो मेरे पल्ले ही न पड़ी
फिर सोचा हिंदी पढ़कर होगी थोड़ी तसल्ली
पर मात्राओं ने तो मेरी इज्ज़त ही हर ली|
हे भगवान्, क्यों परीक्षा इतना डराती है ?
हम बच्चों के जीवन में, उथल-पुथल मचाती है।

कितना सुंदर, कितना प्यारा

अरनव अग्रवाल, कक्षा -पाँचवीं

कितना सुंदर, कितना प्यारा
छोटा-सा प्यारा परिवार हमारा।
दादा, दादी, मम्मी-पापा
और भैया का मैं हूँ प्यारा।
मिलजुल कर हम सब संग रहते
हर ग़म को मिलकर सब सहते।
कभी किसी से नहीं झगड़ते
मिलजुल कर हर काम को करते।
मम्मी करतीं सबकी प्यार
पापा का सुंदर संसार।
मैं कहता हूँ यही प्रभु से
सबका हो ऐसा परिवार।

"परिवार से ही मनुष्य में संस्कार और मूल्यों का जन्म होता है।"

जीवन नहीं रुक सकता

निलय धकाल, कक्षा -बारहवीं

अनंत अविरल जीवन प्रवाह ,
न रुका कभी. थका भी नहीं।

चट्टानों की बाधाओं से,
नदी का प्रवाह रुका नहीं।
मेघों ने गर्जन किया अपार,
वर्षा का उत्साह थमा नहीं।

अकाल ने चीर दिया धरा का सीना,
अंकुर का विकास रुका नहीं।
परिवर्तन ही जीवन का सत्य,
सृष्टि ने विरोध किया नहीं।

प्रकृति को देखो निश्छल नेत्रों से,
सूक्ष्म चींटी ने संघर्ष छोड़ा नहीं।
इल्ली से तितली होने की प्रक्रिया में,
जीवन ने साथ छोड़ा नहीं।

हंताओं ने कोख में मारने की कोशिश की हजार,
जीवन का प्रवाह रुका नहीं।
शोषकों ने दिए कष्ट अपार. परंतु
बेटियों का लहलहाना थमा नहीं।

अत्याचारियों ने किए अपार अत्याचार,
देशभक्ति की भावना रुकी नहीं।
जन्मभूमि की आज़ादी के लिए संघर्ष हुए हजार,
किंतु वीरांगनाओं ने हार मानी नहीं।

आए जैसे भी संकट जटिल,
मानवता ने हार मानी नहीं।
मानव ने संघर्ष किया सदा ही,
वह कभी रुका नहीं, थका नहीं।

अधर्म और अन्याय की बाढ़ में,
धर्म कभी बहा नहीं, कभी झुका भी नहीं।
कितना ही प्रबल हो जल प्रवाह,
सत्य की नौका डूबी नहीं, घबराई भी नहीं।

एक महामारी

अरुषि मित्तल, कक्षा -आठवीं

हमारे सामने एक महामारी आई है।
इसने पूरी दुनिया में तबाही मचाई है॥
जिससे हमें पूरे साहस और एकता के साथ लड़ना है।
एक दूसरे से कभी भी नहीं बिछड़ना है॥

कोरोना की नहीं चलनी यहाँ मनमानी है।
हमें यह दिखाना है, कि हम हिंदुस्तानी हैं ।।
हम एक दिन सभी सफल ज़रूर होंगे।
हम सबने यही मिलकर ठानी है॥

जीवन में कभी खुशी , कभी ग़म आते ही रहते हैं।
दु:ख के पल सभी को सताते ही रहते हैं।।
जब तक भारत माता हम सबके साथ है।
तब तक जीवन में खुशहाली की आस है।।

बस, अब ईश्वर से एक ही प्रार्थना है।
कि जल्द, यह महामारी जाए।।
पहले जैसे खुशहाल हो हम सभी।
जीवन में हर तरफ हरियाली आए।।

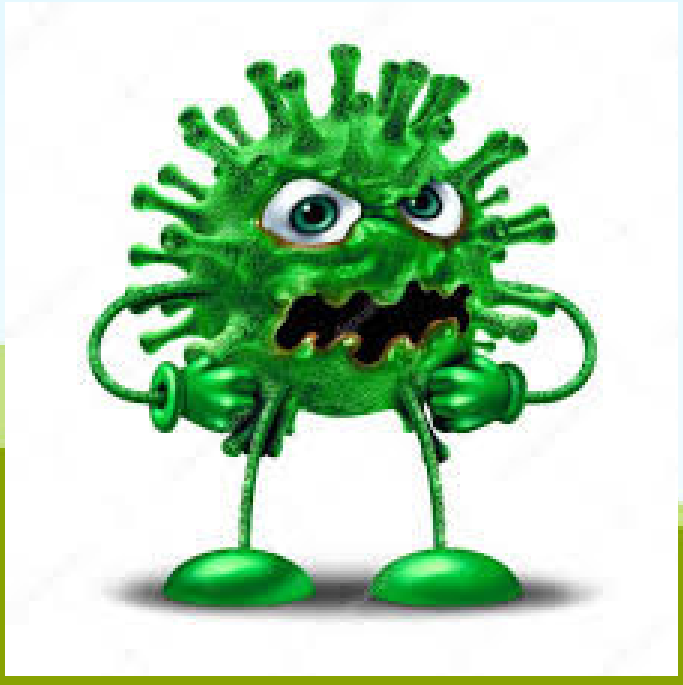

स्वच्छता को अपनाओ, स्वजनों से दो गज की दूरी बनाओ।

दूर से करो सबसे मोहब्बत, करोना को इस तरह हराओ।।

मोहब्बत

अंशु कुमारी , कक्षा - बारहवीं

किसी ने मुझसे पूछा
कि कभी मोहब्बत की है ?
और हर बार की तरह मैं सोचती हूँ
कि हाँ, मैंने भी मोहब्बत की है।
उस बारिश की पहली बूँदों से
जो हवा के संग पैगाम भेजती हैं।
उस सुंदर अधखिली कली से
जो पूरी हवा को महकाती है।
उस उगते सूरज से भी
जो हर सुबह कमरे में घुस आता है।
उस ढलती शाम से भी
जो आसमान को अपने रंग में रंगती है।
उस चलती हवा से भी
जिसके साथ सब झूमते हैं ।
मैंने कहने को हर उस छोटी चीज़ से मोहब्बत की है
जो सिर्फ कहने को छोटी है,
जो कहने को किसी के लिए कुछ नहीं,
तो किसी के लिए सब कुछ है।

मेरा प्यारा भाई

शबाहत अंसारी, कक्षा - पाँचवीं

साल कितने चाहें बीत जाएँ
नहीं बदलेगा मेरा भाई।
है वो प्यारा, है वो न्यारा
वह है मेरा प्यारा भाई।

लड़ता-झगड़ता प्यार भी करता
करतब वह दिखलाता है।
हँस- हँसकर हम सबको
अपने दिल में बसाता है ।

जो वह चाहे, वह पा लेता
बहुत जिद्द वह करता है।
एक जगह पर कभी न रुकता
दौड़ा-दौड़ा फिरता है।

पानी आया

मोहक केजरीवाल, कक्षा - आठवीं

पानी आया पानी आया,
अपने संग ढेरों खुशियाँ लाया।
गरज रहें बादल घनघोर,
चारों ओर मच गया शोर।

जंगल में भी हो गया मंगल,
खुशी में प्राणी करते दंगल।
ठुमक-ठुमक कर नाचे हैं मोर,
जंगल में भी मच गया है शोर।

पी-पी करने लगा पपीहा,
जी भरकर उसने पानी पीया।
टर्र-टर्र कर मेढक टर्राया,
झरनों में भी पानी भर आया।

पानी आया, पानी आया,
अपने संग ढेरों खुशियाँ लाया।
रिमझिम-रिमझिम बूँदें हैं आईं,
खुशियों की सौगते हैं लाईं।

गर्मी का हो गया सफ़ाया,
देख सभी का मन हर्षाया।
पानी आया पानी आया,
अपने संग ढेरों खुशियाँ लाया।

हँसना मना है !!

रामू श्यामू से
रामू- अगर कोई मरता हो तो हम उसे क्या देंगे ?
श्यामू- विरला सीमेंट।
रामू- क्यों ?
श्यामू- क्योंकि इस सीमेंट में जान है।

भारत और अमेरिका के उच्चायुक्त आपस में
अमेरिका- मेरे यहाँ शादियाँ ई-मेल से होती हैं।
भारत- अच्छा, हमारे यहाँ तो आज भी फ़ीमेल से होती है।

जब रखोगे, तभी तो उठाओगे

फरिहा ज़मान, कक्षा -नवमीं

रामनगर के पास नगला उदई नाम का एक गाँव था। इस गाँव में हरीराम नाम का एक किसान रहता था। वह स्वभाव से बहुत ही कामचोर था। उसके पिता धनीराम बहुत ही मेहनती व्यक्ति थे। काफी समय पहले उनकी पत्नी का देहांत हो गया था। अब परिवार में केवल धनीराम और उनका बेटा ही बचा था। पूरा गाँव धनीराम की मेहनत की तारीफ़ करता था। वे अपने बेटे को हमेशा यही समझाते थे कि बिना मेहनत किए, समाज में कोई पहचान नहीं बनती। तुम्हें अपना काम मेहनत से करना चाहिए। हरीराम अपने पिता की इन बातों पर कभी कोई ध्यान नहीं देता था। कुछ समय बाद लम्बी बीमारी के कारण धनीराम का स्वर्गवास हो गया। अब परिवार में केवल हरीराम ही बचा। अपने आलसी स्वभाव के कारण धीरे-धीरे उसने अपने पिता की सारी संपत्ति को खर्च कर डाला।

हरीराम आवारा की तरह दिन-रात लोगों के साथ रहकर गप्पें लगाता और लोगों से पैसे उधार माँगकर अपने खर्चे चलाता था। उसकी इन्हीं आदतों के चलते लोगों ने उसकी शादी भी नहीं होने दी। वह अकेला ही इधर-उधर भटकता- फिरता और सभी जान-पहचान वालों से रुपए उधार लेकर खर्च करता रहता। धीरे-धीरे लोग उसके उधार माँगने की आदत से तंग आ गए और लोगों ने उसे उधार देने से मना करना शुरू कर दिया। हरीराम को उधार न मिलने पर उसे परेशानी होने लगी। अब उसने अपने पड़ोस के गाँव के लोगों से भी मदद माँगनी शुरू कर दी। जब उसको हर जगह से मदद मिलनी बंद हो गई तो वह परेशान होने लगा।

एक दिन वह अपने घर के बाहर बैठा कुछ सोच ही रहा था कि तभी उसे याद आया कि जामनगर में उसके पिता के एक मित्र दिनकर रहते हैं और उसने अभी तक उनसे उधार नहीं लिया है, तो उनके पास चलकर कुछ रुपए ले लेने चाहिए। उन रुपयों से कुछ दिनों तक खर्चा चल जाएगा। यही सोचकर, वह अपने पिता के उस मित्र के घर जामनगर जा पहुँचा। उसने उनको अपनी हालत के विषय में बताया। उसने कहा, “चाचा जी, मुझे अपना काम करने के लिए कुछ रुपयों की आवश्यकता है। अगर मुझे आप पाँच सौ रुपए दे दें, तो मैं अपने व्यापार से शीघ्र कमाकर आपको रुपए वापस दे दूँगा।“

दिनकर ने उसे समझाते हुए कहा कि बाहर के कमरे के एक आले में पाँच सौ रुपए रखे हैं। तुम जाकर वे रुपए ले लो। जब तुम रुपए कमा लो तो उधार लिए रुपए वापस उसी आले में आकर रख देना। हरीराम खुशी-खुशी रुपए लेकर वहाँ से चल पड़ा। उन रुपयों से कुछ दिन उसने अपना समय गुज़ार लिया। लेकिन धीरे-धीरे वे सभी रुपए खर्च हो गए। जब उसके पास रुपए नहीं रहे तो वह दोबारा अपने पिता के मित्र के पास पहुँचा और कुछ और रुपए माँगे। पिता के मित्र ने उससे कहा कि वह ज़रूरत के लिए रुपए उसी आले से जाकर ले ले। जब खुशी-खुशी वह रुपए लेने वहाँ पहुँचा, तो उसने देखा कि आले में एक भी रुपया नहीं हैं। उसने आकर जब चाचा जी से वहाँ रुपए न होने के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि जब रखोगे, तभी तो उठाओगे। जब तुमने वहाँ रुपए रखे ही नहीं तो मिलेंगे कहाँ से ? चाचा जी की बात सुनकर वह हतप्रभ रह गया। वह उनके सामने बहुत शर्मिंदा हुआ।

इस घटना के बाद वह अपना-सा मुँह लटकाए अपने गाँव वापस आ गया। कहीं से उधार मिलने की संभावना न होने पर अंत में उसने मज़दूरी करके अपना भरण-पोषण करने का निर्णय लिया। चाचा जी के उस वाक्य ने हरीराम की ज़िंदगी बदल दी।

समझदार भालू

शांभवी चौहान, कक्षा - पाँचवीं

एक समय की बात है एक जंगल में एक शेर झाड़ी में फँसकर घायल हो गया। वह लंगड़ाकर चलने लगा। अब उससे शिकार नहीं हो पाता था। वह भूख से व्याकुल होकर मरने की कगार पर आ गया। कहते हैं कि शेर मरा हुआ जानवर नहीं खाता है, परंतु अब उसे ज़िंदा रहने के लिए मरे हुए जानवरों को भी खाना पड़ता था। लेकिन अब यह शेर की मजबूरी थी। बेचारा ज़िंदा रहने के लिए क्या न करता। वह वहीं आस-पास ही भोजन की तलाश में मारा-मारा फिरता, परंतु उसे कोई भी मरा हुआ जानवर न मिल पाता। भोजन की तलाश में धीरे-धीरे पैर घसीटता हुआ वह एक गुफा के पास आ पहुँचा। गुफा गहरी और संकरी थी। शेर ने उसके अंदर झाँकर देखा तो वह खाली थी। लेकिन वह समझ गया कि ज़रूर इस गुफा में कोई जानवर रहता होगा। शायद इस समय वह भोजन की तलाश में बाहर गया हो। वह गुफा में बैठकर उस जानवर का इंतज़ार करने लगा, जो उसमें रहता था। उसने सोचा जब वह जानवर अपनी गुफा में शाम को आएगा तब मैं उसे मारकर खा जाऊँगा।

सचमुच उस गुफा में एक भालू रहता था, जो दिन में बाहर घूमता रहता था और रात को लौट आता था। उस दिन भी वह भालू सूरज छिपते ही अपनी गुफा की ओर लौटने लगा। भालू बहुत चालाक था। वह हर समय चौकन्ना रहता था। उसने अपनी गुफा के बाहर जब शेर के पंजों के निशान देखे तब वह समझ गया कि जरूर इसके अंदर कोई जानवर छुप कर बैठ गया है। उसने सोचा यदि वह अंदर जाएगा तो वह जानवर उसका शिकार कर लेगा। इसलिए उसने उस जानवर का पता लगाने हेतु एक चाल चली। गुफा के मुहाने से कुछ दूरी पर खड़े होकर वह ज़ोर ज़ोर आवाज़ लगाकर कहने लगा- गुफा ओ गुफा। गुफा में चुप्पी छाई रही। उसने फिर पुकारा, 'गुफा ओ गुफा' अरे तू बोलती क्यों नहीं है ?

भालू की आवाज़ सुनकर भी अंदर शेर बिलकुल चुप बैठा रहा। उसने सोचा, यदि वह कुछ बोला तो भालू भाग जाएगा और उसे फिर से भूखे पेट ही सोना होगा। इसलिए वह भालू के अंदर आने का इंतज़ार करने लगा। इधर भालू बार-बार गुफा को आवाज़ लगाता रहा। आखिर में, भालू बोला अरी ओ गुफा ! अगर तू बोलेगी नहीं तो मैं दूसरी गुफा में चला जाऊँगा। अच्छा तो मैं चला।

यह सुनकर शेर हड़बड़ा गया। उसने सोचा कहीं यह भालू यहाँ से चला न जाये। इसलिए उसने आवाज़ बदलकर कहा भालू राजा अंदर आ जाओ। मैं कब से तुम्हारी राह देख रही थी। भालू शेर की आवाज़ पहचान गया और उसकी मूर्खता पर हँसता हुआ वहाँ से चला गया और दूसरी गुफा में जाकर रहने लगा। बाद में शेर को अपनी मूर्खता पर बहुत पछतावा हुआ।

करोना काल

वैभव , कक्षा - पाँचवीं

मुझे कोरोना काल में बहुत मजा आया। इस समय पढ़ने में भी बहुत आनंद आ रहा है। अब मैं जो मन में आता है वही पढ़ता हूँ। मेरे जीवन में यह पहली बार हुआ है कि मैंने घर बैठे-बैठे परीक्षा दी है। इस बार घर में रहकर बहुत कुछ सीखा है। माँ की खाना बनाने में बहुत मदद की है। घर के कई कार्य किए। मैंने सलाद बनाना सीखा। प्याज और नीबू काटना सीखा। माँ के साथ मिलकर हमने कुछ पकवान भी बनाए। बस एक बात का दु:ख कि हम
कहीं बाहर घूमने नहीं जा सके । एक तरफ कोरोना ने परेशान कर रखा है वही दूसरी तरफ बरसात के कारण सब जगह पानी भर गया है। अब तक की सबसे बड़ी बाढ़ भी आयी हुई है। इंसान के साथ-साथ जानवर भी परेशान हैं। कोरोना काल में मुझे सबसे अधिक हँसी तब आई जब पता चला कि मेरा पाँच किलो वजन बढ़ गया है। इस समय मैं धनुष चलाना सीख रहा हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि जल्दी से कोरोना संकट खत्म हो जाए। हम सब लौटकर अपने स्कूल आयें।

हँसना मना है!!

सेठ- क्यों रे, कल तूने बाग में पानी क्यों नहीं दिया ?
नौकर- पानी कैसे देता? कल तो पानी बरस रहा था।
सेठ- तो छाता लगाकर दे देता।

एक साहब घड़ी लगाए जा रहे थे। रास्ते में एक आदमी ने पूछा-
आदमी- जनाब आपकी घड़ी में क्या समय हुआ है ?
साहब- दस बजे हैं।
आदमी – यह घड़ी रेडियो से मिली है या टेलीविज़न से।
साहब- जी नहीं, यह ससुराल से मिली है।

सतीश(पापा से)- पापा, 'आई डोंट नो' का अर्थ क्या होता है ?
पापा- मैं नहीं जानता।
सतीश- तब आप अंग्रेजी में एम. ए. कैसे पास हो गए !

सिद्धी पाठक, कक्षा - सातवीं

संपादकीय मण्डल

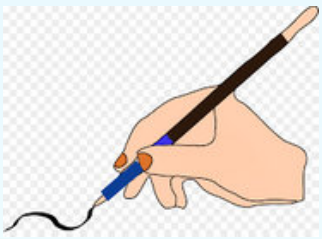

मुख्य संपादक : **आर्यन खाटूवाला**
सहायक संपादिका : **सिकुनप्रिया गोस्वामी**
आवरण पृष्ठ सज्जा : **अनुष्का जोशी**
संकलनकर्ता : **अंशु कुमारी**

प्रभारी शिक्षक : **डॉ. राजेश कुमार मिश्र**
सहायक शिक्षक : **श्रीमान संजय कुमार दीक्षित**
: **श्रीमान प्रेम कुमार सिंह**
: **श्रीमान अनिल कुमार यादव**
: **श्रीमती मनदीप कौर**
: **श्रीमती ममता मिश्रा**

मार्ग दर्शक : **डॉ. विधुकेश विमल**

निज भाषा उन्नति अहै , सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।।